

"महिलाओं के जीवन पर लिंग आधारित हिंसा का प्रभाव: सामाजिक, कानूनी और मनोवैज्ञानिक आयामों की एक महत्वपूर्ण परीक्षा"

अनुसंधान विद्वान, रजिया सुल्ताना

अक्का महादेवी कॉलेज बीदर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

अमूर्त

में जीना चाहती हूँ। मासूम महिलाएं गैंग रेप से पीड़ित हैं, जिससे दिन में 24 बार मासूमों की मौत हो रही है। बहन-बेटियों का दरंद मासूम 10 में घूम रही हूँ। बतिया स्वतंत्र है। वह आजादी चाहती है। इसे एक कहानी (विषय) के रूप में दिया गया है। अधिक मासूम लोगों को मेरी कहानी पढ़नी चाहिए। लड़कियों की रक्षा करें। 12. बलात्कारियों को सज़ा मिलनी चाहिए।

लेख

में जीना चाहती हूँ। अफ़्राज मामूली (साधारण, लेकिन हकिकत में रसच है। मैं ने के जरिए खबर नामा वाक्यात को आप लोगों के सामने जो हुआ हादसा किसी लाई हूँ। कल्पना के दुनिया में जाना चाहता है कल्पना लेकिन लोगों ने ना जाना चाहती थी समाज में रहने वाले कल्पता दंद नाक चादर से आर कल्पना की जिन्दगी छूक दिया यो उसी में सोमह कर हमेशा के लिए कल्पना आऔर गरीब रह गई औरत है मजलूम हार से थी।

वह हर जूलुम का शिकार हुई उसने अपने का इन्तेहय गरीबी को कल्पना पढ़ा। पार कर दी। वजह को स्कूल से छोड़ना की माँ दूसरों के घरों में काम कर के अपनी बेटि कल्पना परवरिका करती थी। जापारी

और नशेबाज़ दिन माँ ने भी एक दि का साथ हछोड़ दिया सबर कल्पता और दुनिया को अलविदा दिया। माँ के गुजर जाने के बाद कल्पता कोई नहीं था।

इस का फायदा उठाया कल्पर जुआ में लगा दिया। जुआरी बाप के गन्दे कारनामों की सजा मासूम बेटी कल्पना को मिला। और जुआरी हमी से कल्पना आदा करादा। कल्पना के रहेना दहेज के लिए लिए उसको परेशान करना हर जुल्म से लड़ती कल्पना बेटी को साथ ले कर अपनी मन्ज़ील की तलाश में निकलती है। एक हादसे में कल्पना की बेटी अपनी आँखे खो देती है। अपनी ज़िन्दगी में अन्धेरा कर लिया कल्पना अपनी बेटी को अपनी आँखों की रोशनी हेली है चाहती थी उसको बही वकील बने उतारगैंग रेप जैसी बीमारी से बेटियों की ज़िन्दगी 2 को बचा सके। दिन रात बिल गए वक्त उड़ गया बेटी के दाखिले के लिए कल्पता के पास पैसे नहीं थे उसने अपनी किडनी (Kidney) को अस्पताल में बेच हो । मा का अरमान था उसको बेटी वकील बने। लेकिन "माँ कल्पना का यह अरमान टूट कर बीश्वर गया। कयामत की रात ने कल्पना का सब कुछ लूट लिया।

कुछ गुन्डा पिंकी के साथ गैंगरेप करते हैं है। आखों से अन्धी अपनी बेटी के लिए कुछ नहीं कर सकी। 'माँ मुझे बचालो " 12 बेटी chi अवाज सन कर के लिए आवाज छ। लेकिन नहीं था। अन्यों मौ के सामने बेटी गंग रेप होना "माँ" के लिए इस से बड़ा बद किस्मती क्या होगी। अस्पताल में पिंकी जिन्दगी और मौत से लड़ रही थी और दानचा को उपलविदा कह दिया । कल्पना बेटी की मौत की खबर सुनकर बेहोश होती है और अपनी बेटी को उच्यने पास महसूस करते हैं पिंकी अपनी मां से कहती है 'माँ में तेरा सहारा नहीं बन सकी तुने मुझ अपनी आँखों को राम्मानी दी ७अपना किडनी को बेच कर मेरा वकालत में दाविका करवाया - 17 मेरे लिए अपने जिस्म को कमजोर कर लिया। दरिन्दों ने मेरे जिस्म को नोच खायो - कज़ नहा मा उतार सकी। इस बदनसीब बेटी को हर जलम को माफ करदेंग मात देनी वाली कल्पना कोमा में जा चुकी थी। अदालत ने उन लड़कों को फांसी की सजा सुनाई जो पिंकी ई chi रेप किए थे। वह इन्सान नहीं दरिन्द थे। जिस ने एक बेगुनाह पिंकी की जान ली अपनी बेटी के लिए ने हर चाज कुबान किया लेकिन बदले में भी खो दिया।

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

रजिया सुल्ताना
